अध्याय–4
गाँधीजी

– बनारसीदास चतुर्वेदी

यह बतलाने की जरूरत नहीं कि महात्मा गाँधी अत्यंत परिश्रमी व्यक्ति थे। कभी–कभी तो वे रात के ढाई बजे उठ बैठते और दिन में घंटे आधे घंटे का विश्राम करके रात के दस बजे तक काम करते रहते । उनके सिर पर काम का इतना बोझ निरंतर बना रहता था और समस्त देश की चिंता उन्हें इतना व्यस्त रखती थी कि उनके लिए हँसना–हँसाना अत्यन्त आवश्यक हो गया था। एक बार किसी विलायती संवाददाता ने उनसे पूछा– ''गाँधीजी, क्या आप में हास्य की प्रवृत्ति भी है ?'' उन्होंने तुरंत जवाब दिया– ''यदि मुझमें हास्य की प्रवृत्ति न होती तो मैंने कभी का आत्मघात कर लिया होता।''

महात्मा जी का मजाक छोटे–बड़े सभी के साथ चलता था। मन–बहलाव के लिए खास तौर पर छोटे बच्चों के साथ खूब दिल्लगी करते थे। एक बार महात्मा जी ने आश्रम की सभी महिलाओं की मीटिंग अपने कमरे में की। बातचीत का विषय था– उनकी गोद ली गई अछूत कन्या को अपने चौके में बिठला कर रसोई बनाना कौन सिखाएगा। डेढ़ घंटे तक गंभीर वार्तालाप होता रहा। एकत्र स्त्रियों में से कोई भी इस पुण्य काम के लिए तैयार नहीं हुई। सबने एक स्वर में 'ना' कर दिया। स्नान कराने, सिर के बाल काढ़ देने इत्यादि छोटी–छोटी सेवा के लिए कई स्त्रियाँ तैयार हो गईं परन्तु अपने चौके में उस बालिका को घुसने देना किसी को स्वीकार नहीं था। वातावरण कुछ गंभीर–सा हो चला। महात्माजी ने उस समय मुस्कराकर इतना ही कहा– ''तब मुझे अभी लंबी लड़ाई लड़नी पड़ेगी।'' इसके बाद तुरंत ही उन्होंने छोटे–छोटे बच्चों पर, जो अपनी माताओं के साथ बापू के कमरे में चले आए थे, निगाह फेंकी। एक बच्चे के हाथ में उन्हें एक पैसा दीख पड़ा। बस बापू को मौका मिल गया। उन्होंने उससे कहा– ''अरे भाई पैसा मुझे दे दे।''

बालक ने कहा– ''मलाई बर्फ खाईंगे।''

बापू ने कहा– ''हमको तो मलाई की बर्फ मिलती नहीं।''

बालक ने कहा– ''हमारे घर चलो हम तुमे खूब खवावेंगे।''

इसके बाद बापू ने कुछ कहा, जिसमें ''शु'' गुजराती शब्द आया था, जिसके मानी है ''क्या।'' वह बच्चा ''शु'' समझ न सका और सब महिलाएँ हँस पड़ी। बापू भी हँस पड़े। दूसरे दिन जब उस लड़के के पिता ने बापू की सेवा में उपस्थित होकर माफी माँगी तो बापू ने हँसते हुए सिर्फ इतना ही कहा– ''अरे वह बच्चा तो मेरा पुराना दोस्त है।''

बापू की इस स्वाभाविक कोमलता के साथ–साथ कठोर नियंत्रणवृत्ति भी काम करती थी। बापू ने अन्य महिलाओं से तो कुछ नहीं कहा, पर अपने भतीजे मगनलाल गाँधी की धर्मपत्नी को हुक्म दिया–''आप अपने मायके चली जाएँ, पर बच्चों को यहीं छोड़ती जाएँ। मुझे ऐसी बहू नहीं चाहिए जो मेरी लड़की को चौके के भीतर न घुसने दे।'' श्री मगनलाल की धर्मपत्नी को अपने पिताजी के यहाँ जाना पड़ा और छः–सात महीने वहीं रहना पड़ा। यह बतलाने की आवश्यकता नहीं कि अंततः उन्होंने उस तथाकथित अछूत बालिका को रसोई में ले जाना स्वीकार कर लिया।

एक बार बापू की सवेरे की प्रार्थना में शामिल होने के लिए सवेरे पौने चार बजे मैं भी गया था। मेरे हाथ में एक हॉकी–स्टिक थी। उसे प्रार्थना स्थल के बाहर रखकर मैं बैठ गया। प्रार्थना समाप्त होने पर ज्यों ही मैंने हॉकी स्टिक अपने हाथ में ली बापू उधर से आ निकले। हँसकर कहा– ''ये लाठी आपने बड़ी मजबूत बाँधी है।'' मैंने उत्तर दिया– ''इसका नाम श्री माखनलाल चतुर्वेदी ने 'मस्तक–भंजन' रख दिया है। बापू बाले– 'हाँ, और सत्याग्रह आश्रम में 'मस्तक–भंजन' रखनी ही चाहिए।'' आस–पास खड़े आदमी हँस पड़े।

एक बार महात्माजी ने मुझे सवेरे सात और सवा–सात के बीच का टाइम बातचीत के लिए दिया। मैं उन दिनों नया–नया आश्रम में गया था। मन में सोचा कि बापू कहीं जाते थोड़े ही हैं, दो–चार मिनट की देर भी हो जाए तो क्या ? सात बजकर दस–बारह मिनट पर पहुँचा। बापू मुस्कराकर बोले– ''तुम्हारा टाइम तो बीत गया। अब भाग जाओ। फिर कभी वक्त तय करके आना।'' मुझे बहुत लज्जित होना पड़ा।

एक बार फिर ऐसी ही दुर्घटना घट गई, परन्तु उसमें मेरा अपराध नहीं था। बापू ने एक राजा साहब को शाम को तीन बजे का टाइम दिया था और मेरे सुपुर्द का काम यह था कि मैं उनको लाऊँ। उन्हें अहमदाबाद से आना था, इसलिए बस एक मिनिट की देर हो गई। जब मैं राजा साहब को लेकर बापू की सेवा में पहुँचा तो वे बोले– ''मैं तो मिनट भर से आपका इन्तजार कर रहा हूँ।''

बापू चाय को स्वास्थ्य के लिए बहुत ही हानिकारक समझते थे पर जिन्हें चाय पीने की आदत पड़ गई थी, उनके लिए वे चाय का समुचित प्रबन्ध अवश्य कर देते थे। एक बार मिस आगेथा हैरिसन नामक एक अंग्रेज महिला उनके साथ यात्रा पर आ रही थी और उन्हें इस बात की चिंता थी कि उनकी प्रातःकालीन चाय का इन्तजाम कैसे हो सकेगा। महात्मा जी को जब यह पता लगा तो वे बोले– ''आप फिक्र ना कीजिए। मैंने आपके लिए आधा–पौंड जहर रख लिया है।''

एक बार मेरे साथ भी बापू ने चाय के बारे में कई मजाक किए। कलकत्ते से चल कर वर्धा उनकी सेवा में उपस्थित हुआ था। रात के साढ़े आठ से नौ बजे तक का टाइम मुझे दिया था। ठीक वक्त पर पहुँचा। आधे घंटे बातचीत होती रही। चलते वक्त बापू ने कहा– ''खूब आराम से चाय पीना।'' मैंने कहा– ''बापू क्या आपको मेरे चाय पीने का पता लग गया है ?'' उन्होंने कहा– ''हाँ, काका साहब

ने मुझे बतला दिया है कि तुम कलकत्ते में चाय पीने लग गए हो।''

मुझे भी उस वक्त मजाक सूझा। मैंने कहा ''बापू, आप मि.एंड्रूज को छोटा भाई मानते हैं ?''

उन्होंने कहा– ''हाँ।''

''और वे आपको बड़ा भाई मानते हैं।''

बापू ने कहा– ''हाँ।''

मैंने तुरंत ही कहा– ''तो मैं बड़े भाई की बात न मानकर छोटे भाई की बात मानता हूँ।''

बापू हँसकर बाले– ''तब तो मैं एन्ड्रूज को लिख दूँगा कि तुमको अच्छा शिष्य मिल गया है।''

फिर बापू ने गंभीरतापूर्वक कहा– ''रात के ढाई बजे से उठा हुआ हूँ और अब नौ बज रहे हैं, दिन में बस बीस मिनट आराम मिला है।''

मैं चकित रह गया। अठारह घंटे मेहनत करने के बाद भी बापू कितने सजीव थे, मानो वे हमारी काहिली का प्रायश्चित कर रहे थे।

संध्या समय जब महात्माजी डच–गायना प्रवासी भारतीयों के लिए संदेश लिखाने बैठे तो मैंने अपनी जेब से फाउन्टेन पैन निकाला। तुरन्त ही बापू ने कहा– ''कब से फाउन्टेन पैन से लिखते हो?''

मैंने कहा– ''कई साल हो गए।''

''कितने साल?''

मैंने कहा– ''ठीक–ठीक नहीं बतला सकता।''

तब बापू ने कहा– ''दक्षिण अफ्रीका में मेरे पास फाउन्टेन पैन था, परन्तु अब तो कलम से लिखता हूँ। डच–गायना वाले भी क्या कहेंगे कि इनके पास घर की कलम भी नहीं।''

तुरन्त चाकू और कलम मँगाई गई, परन्तु मैं जिस कागज पर लिखने चला था, वह था बढ़िया बैंक पेपर। बापू ने कहा– ''यह बढ़िया कागज हम लोगों को कहाँ मिल सकता है? यह तो तुम्हारे ऑफिसवालों को ही मिलता है, जहाँ चाय भी मिलती है। हम तो कोरा पानी पीने वाले गरीब आदमी ठहरे।''

मैं लज्जित हो गया। फिर बापू गम्भीर होकर बोले– ''मेरा संदेश स्वदेशी कागज पर लिखो। आज तो हम लोगों ने आश्रम में कार्ड और लिफाफे भी बनवाए हैं।'' हाथ का बना कागज लाया गया और मैंने नेजे की कलम से और घर की स्याही में बापू का संदेश लिखा।

बापू अपने अधीनस्थों को पूरी–पूरी स्वाधीनता देते थे और वे भी उनसे मजाक करने में न चूकते थे। मैं भी यह धृष्टता कर बैठता था। जब श्री पद्मजा नायडू के लिए 'कॉफी' का सब सामान लाया गया तो बापू ने हँसकर कहा– ''यह सब साज सामान है।''

मैंने कहा– ''देखिए बापू, मेरी वोट बढ़ रही है।''

''कैसे?''

मैंने कहा– ''महादेव भाई चाय पीते हैं, बा कॉफी पीती हैं और पद्मजाजी भी कॉफी पीती हैं और मैं चाय। चार वोट हो गई।''

बापू ने तुरंत उत्तर दिया– ''बुरी चीजों के प्रचार के लिए वोट की जरूरत थोड़े ही पड़ती है, वे तो अपने आप फैलती हैं।''

बापू मजाक में पीछे रहने वाले आदमी नहीं थे। वे बड़े हाजिर–जवाब थे।

एक बार विद्यापीठ के प्रिंसिपल कृपलानीजी बोले– ''जब तक हम लोग आपसे दूर रहते हैं, हमारी अक्ल ठीक रहती है, परन्तु आपके पास आते ही खराब हो जाती है।''

बापू हँसकर बोले– ''तब तो मैं आपकी खराब अक्ल का जिम्मेदार ठहरा।''

खूब हँसी हुई। कलकत्ते में मुझे बापू ने बीस मिनट का टाइम दिया था– सवेरे पौने चार बजे का। अकेले जाने के बजाय मैं 16–17 आदमियों के साथ गया। जब जीने पर चढने लगा, तब महादेव भाई नाराज भी हुए, बोले– ''आप तो आश्रम में रह चुके हैं। यह क्या बे–नियम कार्यवाही करते हैं ?'' परन्तु महात्माजी ने इतना ही कहा– ''तुम तो फौज की फौज ले आये।''

मैंने कहा– ''क्या करता, ये लोग माने ही नहीं, मैंने इन्हें वचन दे रखा था कि बापू के दर्शन निकट से कराऊँगा।''

बीस मिनट तक वार्तालाप होता रहा। जब प्रार्थना के लिए बापू उठे, तो मैंने कहा– ''बापू, मैं तो मासिक पत्र में आपके खिलाफ बहुत लिखा करता हूँ।''

बापू ने कहा– ''सो तो ठीक है, पर कोई सुनता भी है ?'' सब हँस पड़े।

मुनि श्री जिनविजय ने बापू का एक किस्सा सुनाया था। बापू पहले मोटर से बाहर निकले, परन्तु थोड़ी दूर चलकर कोने में अपनी मोटर खड़ी कर ली। इसके दो मिनट बाद ही पण्डित मोतीलाल जी नेहरू और मुनिजी की मोटर निकली। मोतीलाल जी ने मुनि से कहा– ''देखा आपने ? महात्माजी ने मेरे ख्याल से अपनी मोटर रोक रखी है। चलकर उनसे कारण पूछें।'' पण्डितजी ने जब पूछा तो महात्माजी बोले– ''मैं यह नहीं चाहता था कि आपको धूल फाँकनी पड़े। मैं तो आपको ज्यादा दिन जिन्दा देखना चाहता हूँ।''

महात्माजी के मजाक, हाजिर–जवाबी और उनकी जागरूकता के सैंकड़ों किस्से हैं, जो उनके भक्तों को समय–समय पर याद आते रहते हैं। साथ ही अपनी धृष्टता का खयाल करके लज्जा का बोध ा भी होता है। ऐसे अवतारी महापुरुष मर्यादा पुरुषोत्तम के साथ किसी भी प्रकार का मजाक हिमाकत तो था ही, परन्तु वे अत्यंत क्षमाशील थे और सबको पूर्ण स्वाधीनता देने के पक्षपाती। उनकी पावन स्मृति में सहस्रों बार प्रणाम!

अभ्यास के लिए प्रश्न

प्र. 1 गुजराती में 'शु' का अर्थ होता है –

(क) कौन (ख) कब (च) क्या

(ग) क्यों (घ) किसे ?

प्र. 2 माखनलाल चतुर्वेदी ने 'मस्तक–भंजन' किसे कहा है –

(क) लाठी (ख) हॉकी स्टिक (च) पत्थर

(ग) क्रिकेट बॉल (घ) हथौड़ा

प्र. 3 विलायती संवाददाता के प्रश्न का गाँधीजी ने क्या जवाब दिया?

प्र. 4 बापू की स्वाभाविक कोमलता के साथ–साथ कौन सी वृत्ति काम करती थी?

प्र. 5 लेखक को गाँधीजी के समक्ष लज्जित क्यों होना पड़ा?

प्र. 6 गाँधीजी के संस्मरणों के आधार पर बतलाइए कि जीवन में हास्य की प्रवृत्ति का क्या महत्व है?

प्र. 7 समय की नियमितता के सम्बन्ध में गाँधीजी का क्या दृष्टिकोण था? उदाहरण सहित उत्तर दीजिए।

प्र. 8 'विनोद के समय भी गाँधी जी अपनी जागरूकता एवं हाजिर–जवाबी में पारंगत थे' ? पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

प्र. 9 निम्नलिखित विषयों पर गांधीजी की दृष्टि से टिप्पणियाँ लिखिए –

(क) छूआ–छूत (ख) चाय–काफी

(ग) स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग (घ) अस्त्र–शस्त्र

शब्दार्थ

विलायती – विदेशी / प्रवृत्ति – आदत / दिल्लगी – मजाक/हँसी ठिठोली / आत्मघात – स्वयं को नुकसान पहुँचाना / अधीनस्थ – किसी के अधीन कार्य करने वाला / निगाह – नजर डालना/देखना / आश्रम – रहने का स्थान / शु' – क्या (गुजराती शब्द) / बाल काढ़ना – केश सँवारना / धृष्टता – दुस्साहस / सुपुर्द – सौंपना

/ मस्तक भंजन – सिर फोड़ना / हिमाकत – मूर्खता/अविवेक / सहस्रों – हजारों / खिलाफ – विरोध में / पौंड – एक मुद्रा, वजन मापने की इकाई / प्रवासी – प्रवास करने वाला / धूल फाँकना (मु) – व्यर्थ घूमना / हाजिर जवाब – तुरन्त जबाब देने वाला / लज्जित होना – शर्मिन्दा होना / काहिली – आलसीपन